कैंसर अनुसंधान में जेंडर भेद

यह तो जानी-मानी बात है कि कई कामों में महिलाओं की भागीदारी पर्याप्त नहीं है। बताया जाता है कि विज्ञान के उच्चतर पदों पर महिलाओं की उपस्थिति उनके वास्तविक योगदान का प्रतिनिधित्व नहीं करती। मगर आश्चर्य की बात यह है कि कैंसर अनुसंधान में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व उनकी जनसंख्या के अनुपात में नहीं है। विशेषज्ञों का मत है कि इसकी वजह से कैंसर की स्थिति और उसके इलाज को लेकर हमारे सामने जो चित्र है वह काफी असंतुलित है।

मिशिगन विश्वविद्यालय की रेशमा जग्सी और उनके सहयोगियों ने कैंसर अनुसंधान के एक अध्ययन के आधार पर उक्त असंतुलन उजागर किया है। जग्सी व उनके साथियों ने कैंसर उपचारों के संदर्भ में किए गए 661 परीक्षणों के आंकड़े देखे। इन परीक्षणों में कुल लगभग 20 लाख मरीज़ शामिल किए गए थे। जग्सी ने इनमें से उन परीक्षणों पर ध्यान दिया जो ऐसे कैंसरों से सम्बंधित थे जो स्त्री-पुरुष दोनों में बराबर स्तर तक पाए जाते हैं। मतलब इन कैंसरों के प्रकोप में कोई जेंडर भेद नहीं था। उन्होंने पाया कि 7 में से 6 परीक्षणों में महिलाओं का अनुपात उनमें कैंसर के प्रकोप के अनुपात से बहुत कम था।

कैंसर नामक पत्रिका में प्रकाशित इन परिणामों पर गौर करें तो पाते हैं कि ये परीक्षण एक आंशिक चित्र ही प्रस्तुत कर सकते हैं। इस संदर्भ में खास तौर से यह बात ध्यान में रखने की है कि कैंसर के निदान के लिए की जाने वाली जांच, रोकथाम के उपायों, कैंसर के ज़ोखिम के लक्षणों और इलाज के मामले में स्त्री व पुरुषों के बीच अंतर होते हैं। जैसे यह देखा गया है कि पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों में कैंसर की दवा कार्बोप्लेटिन के साइड प्रभाव की आशंका ज़्यादा होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***